अध्याय 23

ताल परिचय

ताल को विभिन्न लयकारियों में लिखने के तरीके को स्वर विहार भाग– 1 में समझाया जा चुका है। संक्षेप में यहाँ उल्लेख किया जा रहा है– किसी ताल के ठेके की दुगुन, चौगुन आदि से तात्पर्य है कि– मूल ठेके में ताल की व्यवस्था में बदलाव करते हुए, जहाँ ठेके में निर्धारित एक मात्रा काल में एक बोलबोला जाता है, वहीं दुगुन क्रिया में एक मात्रा काल में दो बोल बोले जायेंगें तथा चौगुन क्रिया में एक मात्रा काल में चार बोल बोले जायेंगें। इस प्रकार यदि 10 मात्रा की ताल में दुगुन के अंतर्गत पूरे ठेके को 5 मात्रा काल में ही पूरा कर लिया जायेगा। यहाँ विद्यार्थी ध्यान दें कि ताल की मूल रचना 10 मात्रा काल में है, लेकिन दुगुन प्रक्रिया को 5 मात्रा में ही कर लिया गया है, अतः शेष 5 मात्रा काल को पूर्ण करने के दो–दो तरीके हैं–

(1) संपूर्ण ताल के मात्रा काल में दुगुन क्रिया को दो बार बोला जाये अर्थात् ताल के दो आवर्तन बोले जायेंगे।

(2) प्रारंभ में 5 मात्रा तक ठेका तथा शेष 5 मात्राओं में दुगुन की प्रस्तुति अर्थात् 10 मात्रा काल में दुगुन की आर्वति अंतिम 5 मात्रा में ली जाएगी, इस प्रकार ताल का एक चक्र पूर्ण होगा।

उदाहरण– ताल झपताल – 10 मात्रा, भाग 4 ताली 3, खाली 1

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ठेकाबोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
तालचिन्ह	×		2			0		3		
दुगुन (प्रथमतरीका)	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना
तालचिन्ह	×		2			0		3		
दुगुन (दूसरातरीका)	धी	ना	धी	धी	ना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना
तालचिन्ह	×		2			0		3		

इसी प्रकार सभी तालों में दुगुन व चौगुन (एक मात्रा में 4 बोल) क्रियाओं को प्रस्तुत किया जा सकता है। पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के ठेके मय दुगुन, चौगुन उल्लिखित किये जा रहे हैं–

ताल तीव्रा (7 मात्रा, 3 भाग)

तीव्रा ताल में 7 मात्रा व 3 भाग हैं, इसके विभाग क्रमशः 3/2/2 मात्राओं में विभाजित हैं। तीव्राताल का वादन पखावज वाद्य पर अधिक किया जाता है इसमें खालीं नहीं होती है, क्रमशः 1, 4, 6 वीं मात्रा पर ताली है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
ठेका	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
तालचिन्ह	×			2		3	
दुगुन	धादिं	तातिट	कतगदि	गन,धा	दिंता	तिटकत	गदिगन
तालचिन्ह	×			2		3	
चौगुन	धादिंतातिट	कतगदिगनधा	दिंतातिटकत	गदिगनधादिं	तातिटकतगदि	गनधादिंता	तिटकटगदिगन
तालचिन्ह	×		2			0	

ताल झपताल– (10 मात्रा, 4 भाग)

ताल झपताल का विभाजन 2/3/2/3 के क्रम से है इस ताल में तीन ताली (1, 3, 8 वीं मात्रा पर) तथा एक खाली (6वीं मात्रा पर है)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ठेकाबोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
तालचिन्ह	×		2			0		3		
दुगुन	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना
तालचिन्ह	×		2			0		3		
चौगुन	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	ऽऽ,धीना	धीधीनाती	नाधीधीना
तालचिन्ह	×		2			0		3		

इकताल (12 मात्रा, 6 भाग)

ताल इकताल में 12 मात्रा व 6 भाग है। प्रत्येक विभाग में दो–दो मात्राएँ हैं क्रमशः 1, 5, 9, 11 वीं मात्रा पर ताली 3, 7वीं मात्रा पर खाली प्रयोग की जाती है। शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक प्रचलित तालों में इकताल का स्थान है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ठेका	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	
दुगुन	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धिंना	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धिंना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	
चौगुन	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे			
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

अंतिम तीन मात्राओं में विद्यार्थी चौगुन बनाने का प्रयास करें।

धमार (14 मात्रा, 4 भाग)

ताल धमार में 14 मात्रा व 4 भाग होते हैं, धमार ताल का भाग विभाजन 5/2/3/4 है इसमें 1, 6, 11वीं मात्रा पर ताली तथा 8 वीं मात्रा पर खाली होती है, धमार गायन शैली में इस ताल का पखावज पर वादन अधिक प्रचलित है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ठेका	क	धिं	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
चिन्ह	×					2		0			3			
दुगुन	क	धिं	ट	धि	ट	धा	ऽ	कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ
चिन्ह	×					2		0			3			
चौगुन	क	धिं	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ऽऽ,कधि	टधिटधा	ऽगतिट	तिटताऽ
चिन्ह	×					2		0			3			

त्रिताल (16 मात्रा, 4 भाग)

त्रिताल अथवा तीन ताल में 16 मात्रा तथा 4 भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में 4–4 मात्राऐं होती हैं। 1, 5 व 13वीं मात्रा पर ताली तथा 9वीं मात्रा पर खाली होती है। शास्त्रीय संगीत में अत्यंत प्रचलित ताल है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ठेका	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिन्ह	×				2				0				3			
दुगुन	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
चिन्ह	×				2				0				3			
चौगुन	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	धाधिंधिंधा	धाधिंधिंधा	धातिंतिंता	ताधिंधिंधा
चिन्ह	×				2				0				3			

पंजाबी ताल

पंजाबी ताल में मात्र सोलह, भाग चार होते है। प्रत्येक भाग में चार–चार मात्रा होती है। एक, पांच तथा तेरह पर ताली और नौ पर खाली।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	ऽधी	ऽक	धा	धा	ऽधी	ऽक	धा	त	ऽती	ऽक	ता	धा	ऽधी	ऽक	धा
X				2				0				3			

दुगन

धाऽधी	ऽकधा	धाऽधी	ऽकधा	ताऽती	ऽकता	धाऽधी	ऽकधा	धाऽधी	ऽकधा	धाऽधी	ऽकधा	ताऽती	ऽकता	धाऽधी	ऽकधा
X				2				0				3			

मुख्य बिन्दु–

- ताल की व्यवस्थित व मूल रचना ठेका कहलाती है जिसमें विभिन्न बोल, विभाग व ताल चिन्ह निर्धारित होते हैं।
- लय (गति) के विभिन्न प्रकार लयकारी कहलाते हैं जैसे दुगुन, तिगुन व चौगुन आदि।
- दुगुन से तात्पर्य एक मात्रा काल में ठेके के (ताल की मूल रचना के) 2 बोल बोले जायेंगे।
- चौगुन लयकारी के अंतर्गत एक मात्रा काल में ठेके के 4 बोल बोले जाऐंगे
-

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

पं. राजेन्द्र गंगानी

1. ग ति ट किस ताल का भाग है ?
   (अ) तीव्रा (ब) झपताल (स) धमार (द) इकताल
2. ताल इकताल में "धिं" का प्रयोग कितनी बार है ?
   (अ) 2 बार (ब) 4 बार (स) 6 बार (द) 3 बार
3. ताल झपताल के आवर्तन की दुगुन कितनी मात्रा में आएगी ?
   (अ) 5 मात्रा (ब) 2 मात्रा (स) 10 मात्रा (द) 7 मात्रा
4. किस ताल का वादन पखावज पर अधिक किया जाता है ?
   (अ) त्रिताल (ब) तीव्रा (स) इकताल (द) झपताल
5. क्रमशः दुगुन व चौगुन लयकारी हेतु एक मात्रा काल में ताल के कितने बोल प्रयुक्त होते हैं ?
   (अ) 2 एवं 4 बोल (ब) 3 एवं 4 बोल (स) 4 एवं 2 बोल (द) 1 एवं 2 बोल

उत्तर– (1) स (2) द (3) अ (4) ब (5) अ

लघुउत्तर प्रश्न–

1. ताल त्रिताल की चौगुन के चार आवर्तन, कितनी मात्रा में आयेगें?समझाइये
2. ताल इकताल की दुगुन, व चौगुन का एक–एक आवर्तन, ताल के एक चक्र में ही किस प्रकार लिखा जाएगा ?स्पष्ट कीजिए।
3. ताल के एक आवर्तन की लयकारी तथा संपूर्ण ताल के एक आवर्तन में लयकारी को समझाइये।

अभ्यास बिन्दु

- पाठ्यक्रम की तालों के ठेके ताली खाली लगाकर अभ्यास करें।
- लयकारी का अभ्यास द्रुत मध्य व विलंबित लय में करें।
- विभिन्न तालों की दुगुन चौगुन लयकारी के एक–एक आवर्तन को संयुक्त रूप से किसी ताल के एक ही आवर्तन में अभ्यास करें।